SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI
Monthly Newsletter
मार्च 2026
"परिवर्तन की गूँज, अब हर चौखट तक"

'संकल्प एक प्रयास' के दीक्षांत समारोह में गूंजी बदलाव की गूंज: 63 फेलोज को मिला प्रमाण पत्र

स्थान: स्वामी आत्मानंद भवन, पाटन **दिनांक: 29 मार्च, 2025**

दो वर्षों की कठिन तपस्या, धूल भरे रास्तों पर ग्रामीण सेवा का जुनून और व्यवस्था बदलने का अटूट संकल्प—पाटन के स्वामी आत्मानंद भवन में कुछ ऐसा ही नजारा था। अवसर था "संकल्प एक प्रयास (फैलोशिप 2023-25)" के भव्य दीक्षांत समारोह का। यह आयोजन केवल प्रमाण पत्रों के वितरण का माध्यम नहीं था, बल्कि उन 63 'परिवर्तन दूतों' की विदाई और नए मिशन की शुरुआत का उत्सव था, जो अब ग्रामीण भारत की सूरत बदलने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

देशभक्ति और गरिमा के साथ शुभारंभ

कार्यक्रम का आरंभ राष्ट्रगान की गूँज के साथ हुआ, जिसने उपस्थित जनसमूह के भीतर कर्तव्यबोध की ज्वाला प्रज्वलित कर दी। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री राजीव वर्तक जी, श्री नील कुमार जी, श्री शेखर जी ,दीपक सर जी और संकल्प एक प्रयास के संस्थापक व कार्यक्रम के सूत्रधार श्री परिमल सिन्हा जी सहित कई गणमान्य विभूतियाँ उपस्थित रहीं। पारंपरिक शॉल और पुष्पगुच्छ से अतिथियों का स्वागत कर छत्तीसगढ़ी संस्कृति और आत्मीयता का परिचय दिया गया।

स्मृतियों के झरोखे से: 'सीख-सृजन-गरिमा' पुस्तक का विमोचन

समारोह के दौरान वार्षिक रिपोर्ट पुस्तक 'सीख-सृजन-गरिमा' का विमोचन किया गया। इसके साथ ही फैलोशिप यात्रा पर आधारित एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखाई गई। जब स्क्रीन पर बीते दो वर्षों के संघर्ष, गाँवों की गलियां और बच्चों की मुस्कुराहटें दिखीं, तो कई फेलोज की आँखें नम हो गईं।

कृतिका, प्रेमांजलि और भारती पटेल ने मंच से साझा किया कि कैसे 'सृजन', 'सीख' और 'गरिमा' परियोजनाओं ने धरातल पर बदलाव की नींव रखी है।

सम्मान की गूँज: जब मेहनत को मिला 'बाबू जोसेफ अवार्ड'

समारोह का सबसे प्रतीक्षित क्षण 'फैलोशिप सर्टिफिकेट' का वितरण था। अतिथियों के कर-कमलों द्वारा 63 फेलोज को उनकी सेवा और समर्पण के लिए सम्मानित किया गया।

विशेष उपलब्धियों के लिए 'बाबू जोसेफ अवार्ड' की घोषणा की गई, जिसमें:

- 08 फेलोज को उनके जमीनी स्तर पर आए बदलाव के लिए 'प्रभाव पुरस्कार' मिला।
- 05 फेलोज को उनकी कार्यकुशलता के लिए 'प्रशंसा पुरस्कार' से नवाजा गया।

प्रेरणादायी उद्बोधन: सपनों को मिली नई उड़ान

अतिथियों के संबोधन ने फेलोज के भीतर भविष्य के सपनों को नई उड़ान दी:

- **श्री नील कुमार जी :** "परिमल सर का संकल्प मील का पत्थर है। जब एक महिला सशक्त होती है, तो पूरा समाज शिक्षित होता है। उनका लक्ष्य 2028 तक 250 गाँवों को 'आदर्श बालग्राम' बनाना है।"
- **श्री राजीव वर्तक जी :** "असली शिक्षा वह नहीं जो बंद कमरों में मिलती है, बल्कि वह है जो बुनियादी समझ विकसित करे। पाठ्यक्रम से इतर काम करने का आपका तरीका ही वास्तविक क्रांति लाएगा।"
- **श्री परिमल सिन्हा जी :** उन्होंने भविष्य का खाका खींचते हुए 2026 की 'इम्पैक्ट रिपोर्ट' साझा की। उन्होंने बताया कि आने वाले समय में 150 फेलोज (50 गरिमा, 50 सीख, 50 सृजन) और 50 एबीजी फेलोज ग्रामीण विकास की धुरी बनेंगे। उन्होंने सहयोगी संस्थाओं और विनीत अय्यर सर के प्रति विशेष कृतज्ञता व्यक्त की।

सांस्कृतिक छटा और संकल्प की लौ

प्रशिक्षणरत फेलोज ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। लोक नृत्यों और गीतों के माध्यम से 'विविधता में एकता' का संदेश दिया गया।

एक विदाई, जो नई शुरुआत है

समारोह के अंत में माहौल भावुक था, लेकिन यह दुख की विदाई नहीं थी। फेलोज की आँखों में एक चमक थी—आत्मविश्वास की चमक। "संकल्प: एक प्रयास" अब महज एक संस्थागत कार्यक्रम नहीं रह गया है, बल्कि एक जन-आंदोलन का रूप ले चुका है, जो आने वाले समय में सशक्त और आत्मनिर्भर भारत की तस्वीर पेश करेगा।

"हाथों में डिग्री नहीं, समाज बदलने का नक़्शा लेकर निकले हैं ये 63 युवतियाँ और महिलाएँ।"

उड़ान के लिए तैयार ग्रामीण बेटियां:

'संकल्प' की मशाल थामे बनेंगी आत्मनिर्भरता की मिसाल

[उतई ऑफिस]23,फ़रवरी 2026

ग्रामीण भारत की गलियों से निकलकर अब बदलाव की एक नई इबारत लिखी जा रही है। सामाजिक संस्था 'संकल्प एक प्रयास' के तत्वावधान में ग्रामीण युवतियों के सशक्तिकरण का सपना अब धरातल पर उतरता दिख रहा है। हाल ही में संपन्न हुए प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा में 72 ट्रेनिंग फेलोज के चेहरों पर झलकता आत्मविश्वास इस बात का प्रमाण है कि वे अब केवल सपने नहीं देख रहीं, बल्कि उन्हें हकीकत में बदलने की दक्षता भी हासिल कर चुकी हैं।

तीन स्तंभ : सीख, सृजन और गरिमा

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम को तीन मुख्य आधारों पर बांटा गया है, जो युवतियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करते हैं। परीक्षा के परिणामों ने इन क्षेत्रों में उनकी गहरी पकड़ को सिद्ध किया है:

प्रोजेक्ट	फेलोज की संख्या	मिशन का उद्देश्य
सीख	27	शिक्षा की नींव मजबूत कर ज्ञान का प्रकाश फैलाना। |
सृजन	21	नवाचार और रचनात्मकता से नए अवसरों का निर्माण।
गरिमा	24	आत्म-सम्मान के साथ सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध चेतना।

भविष्य के 'परिवर्तन दूत' तैयार:

ABG फेलोस के क्षमता वर्धन के लिए सेमेस्टर कक्षाओं का आगाज़

दुर्ग/पाटन

शिक्षा और महिला सशक्तिकरण की मशाल को ग्रामीण अंचलों तक पहुँचाने वाले ABG (आदर्श बाल ग्राम) फेलोस के लिए 20 मार्च का दिन एक नई ऊर्जा लेकर आया। जमीनी स्तर पर दो साल के कड़े अनुभव और निरंतर सीखने की प्रक्रिया के बाद, अब इन फेलोस की कार्यकुशलता को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए विशेष सेमेस्टर कक्षाओं की शुरुआत की गई है।

अनुभव की नींव पर दक्षता का निर्माण

पिछले दो वर्षों में इन फेलोस ने गांवों की पगडंडियों से लेकर स्कूलों की चौखट तक जो कुछ भी सीखा है, वह उनके भीतर एक 'ज्ञान के पुंज' (Pool) के रूप में संचित है। यह सेमेस्टर क्लास इसी संचित ज्ञान को तराशने का एक माध्यम है। इसका मुख्य उद्देश्य फेलोस को एक ऐसे विशेषज्ञ के रूप में तैयार करना है जो न केवल समस्याओं को पहचान सकें, बल्कि उनका प्रभावी समाधान भी निकाल सकें।

इन माह इन विषय पर कक्षाएं ली गई :-

- **गर्ल्स एंपावरमेंट (बालिका सशक्तिकरण):** बेटियों को जागरूक बनाने और समाज में उनकी समान भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए फेलोस को आधुनिक दृष्टिकोण और रणनीतियों से लैस किया जा रहा है।
- **क्वालिटी एजुकेशन (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा):** शिक्षा केवल साक्षरता तक सीमित न रहे, बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक हो, इसके लिए शिक्षण की बेहतरीन तकनीकों पर चर्चा की जा रही है।
- **क्षमता वर्धन से निपुणता की ओर** यह प्रशिक्षण केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है। यह एक ऐसी कोशिश है जिससे फेलोस अपने कार्यक्षेत्र में और भी निपुण (Expert) बन सकें। जब फेलोस की क्षमता का वर्धन होगा, तब उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों में एक अलग ही गुणवत्ता और निखार देखने को मिलेगा।

ये कक्षाएं इस बात का प्रमाण हैं कि जब सीखने का जज्बा और सही मार्गदर्शन मिलता है, तो समाज सेवा का संकल्प और भी मजबूत हो जाता है। आने वाले समय में ये प्रशिक्षित ABG फेलोस अपने-अपने क्षेत्रों में शिक्षा और सशक्तिकरण के नए मानक स्थापित करेंगे।

परीक्षा नहीं, यह तो नेतृत्व का उदय है

यह परीक्षा केवल अंकों का खेल नहीं थी, बल्कि यह मूल्यांकन था उन ग्रामीण नायिकाओं का जो आने वाले समय में अपने गाँवों की सूरत बदलेंगी। 'आदर्श बालग्राम' की परिकल्पना को साकार करने के लिए इन युवतियों को नेतृत्व क्षमता (Leadership) और समस्या समाधान (Problem Solving) के कड़े पैमानों पर प्रशिक्षित किया गया है।

"ये 72 युवतियां महज प्रतिभागी नहीं हैं, बल्कि ये बदलाव की वो 'एजेंट्स' हैं जो समाज की रूढ़ियों को तोड़कर प्रगति का नया रास्ता बनाएंगी। इनका आत्मविश्वास ही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है।"

—,ABG FELOW

भविष्य की ओर बढ़ते कदम

परीक्षा हॉल से बाहर निकलती इन युवतियों की आँखों में एक चमक थी—अपने गांव को बेहतर बनाने की चमक। प्रशिक्षण के अगले चरणों में इन्हें सीधे तौर पर ग्रामीण विकास की परियोजनाओं से जोड़ा जाएगा, जहाँ ये 'सीख, सृजन और गरिमा' के मंत्र को हर घर तक पहुँचाएंगी। 'संकल्प एक प्रयास' की यह पहल यह साबित करती है कि यदि ग्रामीण प्रतिभा को सही दिशा और अवसर मिले, तो वे न केवल आत्मनिर्भर बन सकती हैं, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बन सकती हैं।

संकल्प से सिद्धि:

जब सेवा भाव को मिला प्रशासनिक सम्मान

समर्पण और सेवा की एक अटूट कड़ी

कहानी की शुरुआत होती है एक संकल्प से—ग्रामीण अंचल में स्वास्थ्य और जागरूकता की रोशनी पहुँचाने का संकल्प। पिछले दो महीनों से, राधिका साहू, जो 'संकल्प एक प्रयास' संस्था के 'गरिमा' कार्यक्रम की एक समर्पित फेलो हैं, ने अपनी कर्मठता से इस संकल्प को सिद्ध कर दिखाया है।

चुनौतियों के बीच सेवा का सफर

राधिका ने 'चिरायु' टीम के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से एक सेतु का कार्य किया। विशेष रूप से मार्च के महीने में, जब गर्मी की दस्तक हो रही थी, राधिका ने 20 से अधिक स्वास्थ्य शिविरों में अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराई। ये शिविर मुख्यतः दूर-दराज के स्कूलों और आंगनवाड़ी केंद्रों में आयोजित किए गए थे, जहाँ स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सबसे अनिवार्य होती है।

जागरूकता से बदलाव की ओर

इन शिविरों का उद्देश्य केवल शारीरिक जांच तक सीमित नहीं था। राधिका ने 'गरिमा' फेलो के रूप में बच्चों और ग्रामीणों के बीच जाकर उन्हें कई महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूक किया:

- ***स्वास्थ्य जांच एवं सुरक्षित व्यवहार :*** बीमारियों से बचाव के तरीके।
- ***नशा मुक्ति अभियान :*** युवाओं और समुदाय को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत कराना।
- ***परामर्श :*** बेहतर जीवनशैली के लिए मार्गदर्शन।

इस पूरे सफर में 'चिरायु' टीम का निरंतर मार्गदर्शन राधिका के लिए संबल बना रहा, जिससे हर शिविर और भी अधिक प्रभावी और परिणामोन्मुखी साबित हुआ।

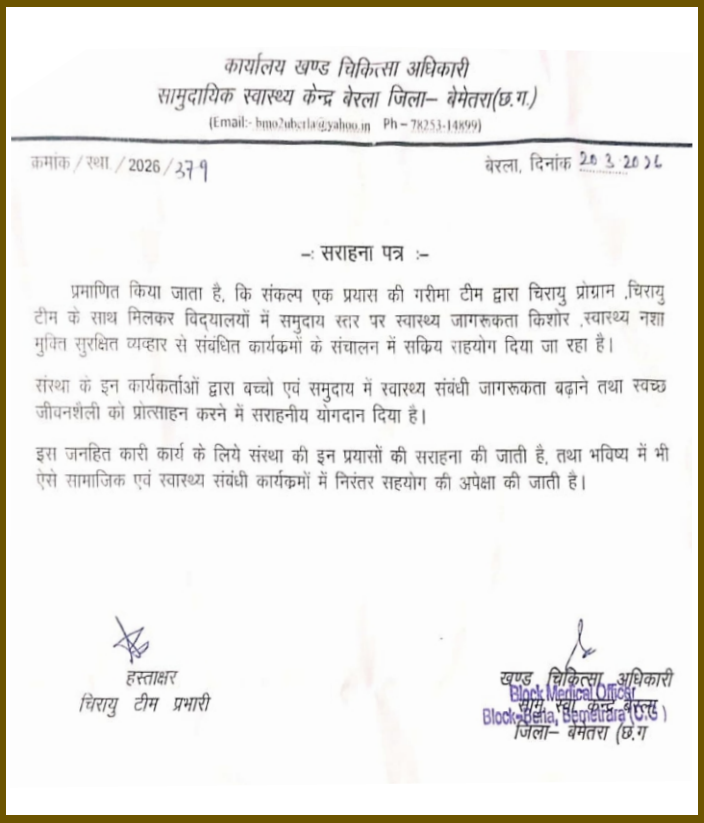

कार्यालय खण्ड चिकित्सा अधिकारी
सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बेरला जिला– बेमेतरा(छ.ग.)
(Email:- bmo2uberla@yahoo.in Ph – 78253-14899)

क्रमांक / स्था. / 2026 / 379 — बेरला, दिनांक 20.3.2026

-: सराहना पत्र :-

प्रमाणित किया जाता है, कि संकल्प एक प्रयास की गरीमा टीम द्वारा चिरायु प्रोग्राम ,चिरायु टीम के साथ मिलकर विद्यालयों में समुदाय स्तर पर स्वास्थ्य जागरूकता किशोर ,स्वास्थ्य नशा मुक्ति सुरक्षित व्यव्हार से संबंधित कार्यक्रमों के संचालन में सक्रिय सहयोग दिया जा रहा है।

संस्था के इन कार्यकर्ताओं द्वारा बच्चो एवं समुदाय में स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ाने तथा स्वच्छ जीवनशैली को प्रोत्साहन करने में सराहनीय योगदान दिया है।

इस जनहित कारी कार्य के लिये संस्था की इन प्रयासों की सराहना की जाती है, तथा भविष्य में भी ऐसे सामाजिक एवं स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों में निरंतर सहयोग की अपेक्षा की जाती है।

हस्ताक्षर
चिरायु टीम प्रभारी

खण्ड चिकित्सा अधिकारी
सामु. स्वा. केन्द्र बेरला
जिला– बेमेतरा (छ.ग
Block Medical Officer
Block-Berla, Bemetrara (C.G)

प्रशासनिक सराहना और गौरव के क्षण

राधिका के इस निस्वार्थ सेवा भाव और 'गरिमा' एवं 'चिरायु' के इस सफल समन्वय को देखकर स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी गदगद हो उठे। शासकीय अस्पताल बेरला के स्टाफ सहित बी.एम.ओ. डॉ. कुंजाम सर और चिरायु प्रभारी डॉ. संजीव ने इस कार्य की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

"यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने हमारे कार्य पर अटूट विश्वास जताया। उन्होंने हमें प्रशंसा पत्र (Appreciation Letter) देकर सम्मानित किया और भविष्य में भी इसी ऊर्जा के साथ साथ मिलकर कार्य करने का निमंत्रण दिया।"

—राधिका साहू, गरिमा फेलो

जिम्मेदारी का नया संकल्प

यह उपलब्धि केवल एक प्रमाण पत्र नहीं, बल्कि उस भरोसे की जीत है जो शासन और प्रशासन ने एक 'गरिमा' फेलो के प्रयासों पर दिखाया है। इस सम्मान ने टीम के उत्साह को दोगुना कर दिया है। 'संकल्प एक प्रयास' की 'गरिमा' और 'चिरायु' के इस साझा मिशन ने यह साबित कर दिया है कि यदि इच्छाशक्ति मजबूत हो, तो समाज के अंतिम व्यक्ति तक बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ पहुँचाना संभव है।

अंगूठे से हस्ताक्षर तक:
एक जिद जिसने बदली गाँव की तकदीर

मेरे गाँव की गलियों में अक्सर एक सन्नाटा पसरा रहता था—वह सन्नाटा जो अक्षरों की पहचान न होने के कारण पैदा होता है। गाँव के कई बुजुर्ग और अभिभावक, जिन्होंने कभी स्कूल की चौखट नहीं लांघी थी, बैंक से लेकर अस्पताल तक हर जगह अपनी पहचान के लिए केवल अंगूठा लगाते थे। उनके चेहरों पर झिझक और दूसरों पर निर्भरता का जो भाव था, उसने मुझे झकझोर कर रख दिया।

यहीं से शुरुआत हुई एक बदलाव की, जिसका नाम था —'उल्लास साक्षरता पहल'।

झिझक से भरोसे तक का सफर

बदलाव इतना आसान नहीं था। मैंने स्कूल के शिक्षकों के साथ मिलकर रणनीति बनाई और घर-घर जाकर 'होम विजिट' शुरू की। जब मैंने अनपढ़ अभिभावकों की सूची तैयार की, तो कई लोग इस उम्र में पढ़ने के नाम पर संकोच कर रहे थे। उनका तर्क था, "अब इस उम्र में पढ़कर क्या होगा?"

मैंने उन्हें प्यार से समझाया कि सीखने की कोई उम्र नहीं होती। मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि अक्षर केवल कागज पर नहीं, बल्कि उनके आत्मविश्वास में चमकेंगे।

प्रेरणा और प्रयास

मैंने केवल रास्ता नहीं दिखाया, बल्कि उनके साथ चला। एक स्वयंसेवक के रूप में:

- मैंने उन्हें उल्लास कार्यक्रम की सरल जानकारी दी।
- परीक्षा का डर निकालने के लिए उन्हें मानसिक रूप से तैयार किया।
- परीक्षा के दिन मैं खुद उन्हें केंद्र तक लेकर गई , ताकि वे अकेला महसूस न करें।

मेहनत तब रंग लाई जब परीक्षा के परिणाम आए। जो हाथ कभी केवल स्याही का निशान छोड़ते थे, वे अब सधे हुए अंदाज में अपना नाम लिख रहे थे। गाँव में साक्षरता रैली का आयोजन किया गया। मैंने स्वयं घर-घर जाकर प्रवेश पत्र बांटे।

कार्यक्रम स्थल पर हमने अक्षर ज्ञान, हिंदी और गणित के कार्ड बनायें। वहाँ का दृश्य अद्भुत था—बुजुर्ग अभिभावक बच्चों की तरह उत्साह से गणित के सवाल हल कर रहे थे और हिंदी के शब्द पढ़ रहे थे।

उपलब्धि: सिर्फ साक्षरता नहीं, सशक्तिकरण

आज बदलाव साफ दिखता है:

- **आत्मनिर्भरता:** अब वे बैंक के फॉर्म खुद भरने की कोशिश करते हैं।
- **आत्मविश्वास:** जो लोग बोलने से डरते थे, वे आज मंच पर पढ़कर सुनाते हैं।
- **प्रेरणा:** उनकी आँखों की चमक यह बताती है कि वे अब खुद पर गर्व महसूस करते हैं।

"यह पहल मेरे लिए केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि एक अंधेरे कमरे में दीया जलाने जैसा अनुभव था। उन बुजुर्गों की मुस्कान ही मेरी सबसे बड़ी डिग्री है

नन्हे कदम, बड़ा बदलाव:
साजा के बच्चों की स्वच्छता क्रांति

7 जनवरी, 2026 | जिला: बालोद

ग्राम साजा की गलियों में सवेरा तो रोज होता था, लेकिन इस सुबह की गूँज कुछ अलग थी। 'संकल्प एक प्रयास' केंद्र में पढ़ने वाले बच्चों की आँखों में केवल किताबों के अक्षर नहीं, बल्कि अपने गाँव को सुंदर बनाने का एक सपना भी तैर रहा था।

समस्या से समाधान तक का सफर

बच्चे अक्सर देखते थे कि स्कूल की चहारदीवारी के बाहर और पंचायत भवन के आसपास कचरे का ढेर लगा रहता था। वे जानते थे कि यह केवल गंदगी नहीं, बल्कि बीमारियों को बुलावा है। खेल-खेल में सीखी गई विज्ञान की बातें उन्हें याद आने लगीं—कि कैसे यह कचरा हवा और पानी को दूषित कर उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डाल सकता है। तभी बच्चों ने ठाना कि वे केवल पढ़ेंगे नहीं, बल्कि कर के दिखाएंगे।

जागरूकता की गूँज

एक सुनियोजित योजना के तहत, बच्चों ने स्वच्छता जागरूकता रैली की शुरुआत की। हाथों में तख्तियां और जुबां पर "स्वच्छ साजा, स्वस्थ साजा" के नारे लिए, 30 नन्हे सिपाहियों की टोली निकल पड़ी।

इस मुहिम में उनका मार्गदर्शन कर रहे थे:

- चांदनी (सृजन फेलो)
- भावना (एल.आर.सी टीचर, सृजन)
- खुशबू और भुनेश्वरी (सीख प्रोग्राम)

इन शिक्षकों और मार्गदर्शकों ने बच्चों के उत्साह को एक दिशा दी। रैली के दौरान बच्चों ने ग्रामीणों से संवाद किया, उन्हें कचरा डस्टबिन में डालने और अपने घर के आसपास सफाई रखने के फायदे समझाए।

एक सराहनीय प्रयास

जब बच्चों को पसीना बहाते और सफाई के प्रति इतने गंभीर देखा, तो गाँव के बुजुर्गों और युवाओं के चेहरों पर भी एक नई चमक दिखी। यह नजारा केवल एक रैली नहीं, बल्कि इस बात का प्रमाण था कि बदलाव की शुरुआत उम्र से नहीं, इरादे से होती है।

बच्चों का यह प्रयास न केवल प्रशंसनीय है, बल्कि बालोद जिले के अन्य गांवों के लिए एक मशाल की तरह है। साजा के इन छोटे बच्चों ने आज बड़े बड़ों को एक बड़ा सबक सिखा दिया है।

"बदलाव की शुरुआत हमेशा घर से होती है, और जब बच्चे मशाल थाम लें, तो उजाला पक्का है।"

SEP की गतिविधियाँ और कवरेज”

फेलोशिप प्रोग्राम

ABG Fellows
31

Seekh Fellows
05

Srijan Fellows
09

Garima Fellows
08

Trainee Seekh Fellows
26

Trainee Srijan Fellows
21

Trainee Garima Fellows
24

गरिमा : प्रोग्राम

गरिमा मंच
200 (4834 प्रतिभागी)

स्कूल कार्यशाला
110 (5050 प्रतिभागी)

किशोर सभा
127 (3780 छात्र सदस्य)

ABG सपोर्ट समूह
60

होम विजिट
48

जागरूकता कार्यक्रम (नुक्कड़-नाटक)
90 सत्र

गरिमा पीयर एजुकेटर
46

स्वास्थ्य मेला
19
प्रतिभागी :- 1357 (WOMEN, MEN , ADOLESCENT G,B

Steck holder visit
47

Aaganwadi visit
137

पैड वितरण
105

मेरे प्रिय साथियों,

मार्च 2026 का यह महीना 'संकल्प एक प्रयास' के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। पाटन के दीक्षांत समारोह में जब मैंने उन 63 'परिवर्तन दूतों' की आँखों में आत्मविश्वास देखा, तो मुझे अहसास हुआ कि हमारी फैलोशिप केवल एक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि एक जन-आंदोलन बन चुकी है। चाहे वह राधिका साहू को मिला प्रशासनिक सम्मान हो या साजा के बच्चों की स्वच्छता क्रांति, हर कहानी यह चीख-चीख कर कह रही है कि ग्रामीण भारत अब नेतृत्व के लिए तैयार है। हमारे ABG फेलोस अब केवल कार्यकर्ता नहीं, बल्कि विशेषज्ञ (Experts) बनकर उभर रहे हैं। आइए, 'आदर्श बाल ग्राम' के लक्ष्य की ओर हम अपने कदम और भी मजबूती से बढ़ाएं।

शुभकामनाओं सहित,

परिमल सिन्हा,

संस्थापक- संकल्प एक प्रयास

हमारे सहयोगी संस्थाएं

Caring Friends – Helping Good NGOs Perform Better – MUMBAI

SARDA – SARDA ENERGY & MINERALS LTD.

DONATEKART

Arpan Foundation

Asha for Education – Bringing hope through education

muktangan – learning & growing together

आविष्कार – गणित-विज्ञान की एक प्रयोगशाला – Aavishkaar – Center for Science, Math, Arts and Technology

phf Paul Hamlyn Foundation

INVOLVE – Building Tomorrow

VIKAS SAMVAD

अध्ययन ADHYAYAN

SANKALP – Empowering Dreams, Building Future

SANKALP EK PRAYAS
SOCIETY, BHILAI

Sankalp ek prayas, Virat Nagar, Utai, Durg (C.G.)
Email : sankalpekprayas@gmail | Web : www.sankalpekprayas.org

Follow us on : @SankalpEkPrayas-s4i @SANKALPEK_PRAYAS